 ISSN: 2582-6530

प्रवीण खालिंग की दो कविताएं

(1) प्रेम की मौत

सूखी आंखों में निहारना
मिलेगा आंसूओं का कब्रिस्तान
खामोश होठो पर देखना
मिलेगा अनकही कहानियों का शव।

छूकर तो देखो
अभी मेरे भीतर चल रही है एक अनंत यात्रा
जहां पहुँचकर याद करूंगा प्रेम और क्रान्ति को

इनकी आत्मा अब पिघल चुकी है
कंचनजंघा की ऊंचाई इसके आगे झुक गई है
जैसे झुकता है बुढ़ापा
मर जाती है उनकी जैविक आत्मा
जैसे स्पर्श के साथ ही
मर जाता है प्रेम।

तुम्हारी यात्रा का मैं एक यायावर हूँ
तुम्हारी कल्पना का मैं एक चित्र हूँ
तुम जानते हो कि
भीषण एकांत में
सिर्फ अवसाद पनपते हैं
मूर्तियाँ ढह जाती हैं
खंडहर और गहरे हो जाते हैं
मैं तुम्हारी स्मृति में
पत्थरों को इकट्ठा करूंगा
जिस पर लिखूंगा तुम्हारा नाम
तुम्हारे समय का इतिहास और भूगोल
देखना तब दुनिया तुम्हें बहुत खूबसूरत लगेगी।

(2) बाद में

सड़कों पर फिर से गाय
सड़कों पर फिर से गाड़ी
सड़कों पर फिर से लोग
चलने लगेंगे
फिर से नेता अपनी कुर्सी संभालने लगेंगे।
दोनों मुल्क के बादशाहों के हाथ मिलेंगे।
मीडिया में शांति के उड़ेंगे परिंदे
बागीचों में फिर से खिलेगें फूल
बच्चे स्कूलों में युद्ध का नया इतिहास रटेंगे
जिंदगियाँ नए इतिहास
नए भूगोल
और
नई सरकारों के साथ चलने लगेंगी।

परंतु
वह पिता जिस का बेटा मारा जाता है युद्ध में
वह मां जिस के जिगर का टुकड़ा खो जाता है युद्ध में
वह पत्नी जिसका सुहाग मिट जाता है युद्ध में
और
वह बच्चा जिसके सिर से उठ जाता है बाप का साया
वही जानता है
नेताओं के सपनों के आगे
नेताओं के अहंकार के आगे
हमेशा किसकी होती है हानि
वही पीड़ित परिवार जानता है
क्या हस्र होता है युद्ध का
बाद में।

*(**लेखकीय परिचय:** प्रवीण खालिंग युवा कवि, पत्रकार एवं चिया कविता मंच, सिक्किम के समन्वयक हैं।)*